IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, August 2025
Impact Factor: 7.67

गुप्त शासकों के अभिलेखों में पर्यावरणः मध्यप्रदेश के संदर्भ में

प्रहलाद साकेत
शोधार्थी
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म०प्र०)

सारांश

गुप्त शासको ने सम्पूर्ण देश कों राजनीतिक एकता के सूत्र मे ं बांधने का कार्य किया जिसकी पुष्टि समुंद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के "धरणीबंध" शब्द से होती है। धरणीबंध शब्द का अर्थ सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना होता हैं। गुप्त शासकों ने लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया जिसमें उन्होंने अपने साम्रज्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक उन्नति की जिसके प्रमाण हमें उनके द्वारा निर्ग त अभिलेख एवं मु द्राओं के माध्यम से मिलता है। मध्यप्र देश से गुप्तकालीन शासकों के 11 साथ ही साथ उनके सामं तों के भी 11 अभिलेख प्राप्त हुए है। इन अभिलेखों के माध्यम से गुप्तकलीन सांस्कृ तिक जीवन के साथ ही साथ पर्या वरण से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है। कु मारगुप्त प्रथम के मं दसौर प्रशस्ति में दशपुर नगर की प्राकु तिक सुं दरता का वर्णन दर्शनीय है। जिसके संबं ध मे ं कहा गया है कि जगह–जगह पर पुष्पित, पल्लवित वृक्ष समूह थे, विकसित कमलों एवं कूजते हुऐ हंसो से शोभायमान सरोवर थे। सागर जिले के ऐरण नामक स्थान से प्राप्त बुधगुप्त के ऐरण स्तंभ लेख में उल्लेख मिलता है कि इस काल में अर्थात बुधगुप्त काल में सुरश्मिचन्द्र नाम का प्रशासक कालिंदी नदी के बीच के प्रदेश में राज्यपाल के रूप में शासन करता था। इस अभिलेख से जान पड़ ता है कि संभवत नदियां प्रान्तों एवं जिलो ं के बीच प्राकृ तिक सीमाएं मानी जाती रही होगी साथ ही नगर एवं गॉव के जलापूर्ति का सर्वप्रमुख स्त्रोत होती थी।

मुख्य शब्द – अभिलेख, गुप्त शासक, पर्या वरण, प्रशस्ति, प्रकृति आदि।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-28630